लघु कथाएँ :

छोटे शहर की मां : तीन लघु कथाएं

राजीव रोहित

राजभाषा अधिकारी

भारतीय जीवन बीमा निगम, मुंबई

मो॰ – 9819962252

ईमेल – k.rajiv@licindia.com

छोटे शहर की मां :एक

"मुंबई में तो इतनी सर्दी नहीं पड़ती कि स्वेटर वगैरह निकालना पड़े." 'क' ने हँसते हुये कहा.

"हां यार, ये बात तो है. " 'ख' ने हामी भरी.

" मेरी मां को स्वेटर बुनने का बड़ा शौक था. सर्दी आई नहीं कि घर पत्रिकाओं के बुनाई विशेषांक से भर जाता था. घर के सारे काम करने के बाद नए-नए रंग-बिरंगे डिजाईनों का स्वेटर बुनना मां का विशेष शगल था." 'क' का मां पुराण चालू था.

" फिर तो बड़ी कोफ्त होती होगी. "

" न यार, कोफ्त कैसा? रोज-रोज नए-नए स्वेटर पहनना हमारा विशेषाधिकार बन जाता था.पता है हमारे यहां एक पूरी की पूरी एक बड़ी पेटी मां के बुने हुये स्वेटरों से भरी पड़ी है. जब कभी गाँव सर्दियों में जाता हूँ तो उन्हें निकालकर पहनता हूँ .लेकिन यार , पिछली बार सर्दियों में गया तो नहीं पहन पाया. "

"नहीं पहन पाया ? क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"पेटी के ऊपर बहुत सारा सामान रखा हुआ था. जिन्हें हटाना बड़ी मशक्कत का काम था. स्वेटर निकालना संभव नहीं था.

" फिर ?"

"नई रेडीमेड स्वेटर खरीदनी पड़ी.और कोई विकल्प भी तो नहीं था."

****

छोटे शहर की मां :दो

" भईया , एक बुरी खबर है. "
"क्या...?"
"मां का निधन हो गया."
"ओह ...!"
"कैसे....?"
"दिल का दौरा पड़ा था.आप आओगे न? "

" कैसे आऊं रे....? छुट्टी नहीं मिलेगी."
"भैया, मैं अकेले सब कैसे करूंगा?"
" मैं पैसे डाल दूंगा न.जो आने-जाने में फ्लाईट के खर्च होते वो अंतिम संस्कार में काम आ काम आ जाएँगे. "बड़े भाई ने समझदारी का पाठ पढ़ाया.
"मां को आखिरी बार देखना नहीं चाहोगे...?"
एक क्षण के लिए मौन छा गया.
फिर एक जोश भरी हुई आवाज के साथ शब्द जुबान पर छनकर आए," ऐसा करो न, वीडियो रेकार्डिंग करवाकर व्हाटसप पर भेज देना. मैं बाद में उसे फेसबुक में डाल दूंगा. देखना, हमारे साथ दुनिया देखेगी मां के निधन की खबर.....और शोक भी जताएगी."
" क्या ख्याल है...!"
" जी भैया, अच्छा ख्याल तो है. फिर ठीक है..... "
छोटे भाई ने फोन काटा.
बड़ा भाई फेसबुक पर फ्रेंडलिस्ट देखने लगा.
****

छोटे शहर की मां : तीन

बड़ा भाई तिरुपति से तीर्थस्थल का दौरा करके लौटा तो देखा कि उसके छोटे भाई के मकान के पास काफी भीड़ है. उसका हृदय बुरी तरह धडक उठा. वह भी स्थल पर पहुँच गया.
मां का शव आँगन के बीचो-बीच रखा हुआ था.
उसका मन ग्लानि से भर उठा.
दोनों भाईयों के बीच यह समझौता हुआ था कि एक –एक महिना तक मां दोनों के पास बारी-बारी से रहेगी .
बड़े भाई की बारी आ गई थी. लेकिन तिरुपति का टिकट उसके ट्रेवल एजेंसी ने बड़ी मुश्किल से निकाला था. तो उसे जाना ही था. उसे परिवार सहित जाना पड़ा था. जाने से पहले उसने भाई को पैसे दिये ताकि मां --बाबा को तकलीफ न हो. छोटे भाई ने उसकी अनुपस्थिति में मां को संभाला भी .
"ये कैसे हुआ. " बड़े भाई की आंखो में जबरन के आंसूओं ने घर बनाना जारी रखा.
"भैया, मां रोज आप के घर के दरवाजे पर बैठ जाती थी. कहती थी इसकी बारी है तो इसके घर ही खाऊँगी.तेरे घर का पानी भी नहीं पीना है."
" तुमने बताया नहीं कि मुझे तिरुपति जाना था?"
" बताया तो था. लेकिन उन्हें नाराजगी बस इस बात की थी कि तुमने तिरुपति जाते समय उन्हें बतान जरूरी क्यों नहीं समझा था."
इस बीच बड़े भाई का एक मित्र पहुंचा.
"पहुँच गए आखिरकार. चलो अच्छा हुआ. मां से अंतिम बार मुलाक़ात हो गई. "
" हाँ यार, मुलाक़ात तो हुई लेकिन...?"
"लेकिन क्या...?"
" मां तिरुपति का प्रसाद न खा सकी .जीवन भर यह अफसोस रहेगा. "
सब उसकी बात ध्यान से सुन रहे थे.
'सब सुन रहे हैं.' यह एहसास बड़ा सुखद था.

****